REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 7 | APRIL - 2026

साहित्य एवं तबला रचनाओं का अंतः संबंध

गगन राज
शोधार्थी, संगीत विभाग डॉ हरिसिंह गौर विश्वविधालय सागर म.प्र.

डॉ राहुल स्वर्णकार
शोध निर्देशक

शोध सार:

संगीत की दृष्टि से मानव सभ्यता के विकास के साथ ही यह अनुभव किया गया कि स्वर, वर्ण, अक्षर तथा लय ताल के समन्वित एवं संतुलित संयोजन से रसोत्पत्ति संभव होती है तथा साहित्यिक भावों का प्रभाव साकार होता है। इसी के साथ साहित्य और संगीत का पारस्परिक संबंध स्थापित हुआ, जो निरंतर विकसित होता हुआ वर्तमान तक एक परंपरा के रूप में विद्यमान है।

'भक्ति-रत्नाकर' के रचयिता श्री नरहरि चक्रवर्ती के अनुसार "जिस प्रकार पतवार-विहीन नाव दिशा हीन हो जाती है, उसी प्रकार ताल विहीन संगीत अशुद्ध एवं प्रभावहीन हो जाता है।"[1] यह कथन संगीत में ताल के अनिवार्य महत्व को बता रहा है। उक्त दृष्टिकोण के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि संगीत की सभी विधाओं में साहित्य का अभिन्न संबंध विद्यमान है। गायन में गीत शब्द के माध्यम से तथा नृत्य मेंभाव पक्ष एवं कथा शब्द के माध्यम से, विविध अभिव्यक्तियों द्वारा साहित्य का समावेश संगीत की इन विधा में होता है।

इसी प्रकार ताल एवं अवनद्ध वाद्यों में 'तबला' जो कि आधुनिक काल का एक प्रमुख अवनद्ध वाद्य है अपने आप में, वादन एवं संगति के माध्यम से न केवल ताल की स्थापना करता है, अपितु इसमें निहित अन्य साहित्यिक तत्वों को भी अपने आप में साहित्यिक रूप में समाहित करता है। इसी कारण आज हमारे सामने तबला वादन एवं तबला एकल वादन की महान विस्तृत परंपरा विद्यमान है । तबला एकल वादन की विविध रचनाओं में अन्य साहित्य का विशिष्ट स्थान है। तबला की रचनाओं में ठेका,पेशकार, कायदा, रेला, गत, परन तथा चक्रदार जैसी बंदिशों में काव्यात्मक रचना, लयात्मक अनुशासन अर्थात "यति" एवं छंदात्मक विन्यास का स्पष्ट प्रभाव तबला एकल वादन दौरन देखने को मिलता है। तबला की इन रचनाओं में वर्ण या बोल साहित्यिक छंदों की भाँति रचित होकर एक विशिष्ट बन्दिश(रचना) एवं वादनीय कला का निर्माण करते हैं।

जो भारतीय संगीत की वादन परंपरा को समृद्धि बनाता है। तबला एकल वादन की परंपरा में प्रायः सभी प्रमुख आधुनिक रचनाकारों द्वारा यह बताया गया है कि तबले में निहित सुनियोजित एवं रचित जो बोल समूह होते हैं, वे मूलतः भाषा आधारित संरचना एवं छंदात्मक विन्यास पर आश्रित होता है।

मुख्य बिंदु: तबला, वादन, रचना, साहित्य, संगीत, परम्परा, छंदात्मक विन्यास, नाट्य, टुकड़ा, परन आदि

शोध प्रविधि

शोध पत्र में साहित्य और तबला की रचनाओं में प्रयोगात्मक, समीक्षात्मक शोध प्रविधि और तुलनात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

शोध पत्र

भारतीय संगीत की परंपरा में साहित्य और संगीत का संबंध अत्यंत प्राचीन रहा है। प्राचीन काल में ही जब मनुष्य ने सांस्कृतिक कला और विकास के साथ ही यह अनुभूति उत्पन्न कि भावों की सशक्त संकेत हेतु केवल ध्वनि पर्याप्त नहीं, उसमें अर्थ, भाव और रस की उपस्थिति भी आवश्यक है। तभी से संगीत की दृष्टि से स्वर, लय एवं शब्द (बोल) इन तीनों के समन्वय से संगीत के रूप की पूर्णता मानी गई है।

"गायन में स्वर, पद एवं लय का मिश्रण होता है, वादन में ताल एवं लय की प्रधानता रहती है, नृत्य में भाव भंगिमाएँ तथा 'नाट्य' अभिनय की प्रधानता होती है। उपरोक्त तीनों कलाओं में से वैसे तो 'गायन' को प्रयानता दी जाती है, लेकिन यदि संगीत के मूल तत्वों के रूप में स्वर एवं लय के आधार पर विचार किया जाये तो वाद्य कला एक सम्पूर्ण कला मानी जायेगी जिस पर गायन, नृत्य एवं नाट्य की सफलता निर्भर रहती है।" [2]वहीं संगीत में विशेषतः तबला वादन में प्रत्यक्ष रूप से ध्वनियों, बोलों (वर्णो) के आधार पर रचना में एवं रचनाकारों के माध्यम से साहित्य की अभिव्यक्ति प्राप्त होती है। तबला वादन की विभिन्न रचनाओं में साहित्यिक संरचना स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। कायदे का नियम से बांधा हुआ वादन होता है। इसके जो बोल रूपी व्याकरण की रचना होती है जो वाक्य विन्यास होते हैं वह अधिकतर एक समान प्रतीत होतें हैं और यह एक समान प्रतीत होना पलटा के साथ कायदे की पुनरावृति के कारण है। जिसको साहित्य की भाषा में अनुप्रास अलंकार कहते है।

रेला में गति, प्रवाह और अनुप्रास का भी प्रभाव मिलता है। टुकड़ा, परन और चक्रदार में छंदात्मकता और पुनरावृत्ति साहित्यिक छंदों की के रूप में दिखाई देते है। इन रचनाओं में प्रयुक्त बोलों का प्रयोग इस प्रकार किया जाता है कि वे एक लयात्मक "काव्य" का अनुभव कराते रहें तबला एकल वादन (Solo Performance) को यदि ध्यानपूर्वक सुना जाए या देखा जाए तो इस वाद्य की रचना साहित्यिक दृष्टि से जैसे कथा या काव्य के समान प्रतीत होती है। जहाँ से वादन प्रारम्भ होता है वहीं से साहित्य का प्रभाव भी स्पष्ट दिखाई देता है प्रारंभ में ठेके का सहित्यतिक नाम आधारभूत संरचना एवं मूल बोल है इसके पश्चात पेशकार का वादन होता है जिसको साहित्य की भाषा में 'भूमिका के विकास'से जाना जाता है कायदा के आधार पर रेला के साहित्य का विस्तार हुआ है क्योंकि कायदे के अंतिम चरण से रेले का निर्माण हुआ।

तबला की रचना पर अलंकारिकता और साहित्यिक प्रभाव

तबला वादन में साहित्यिक अलंकार स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं पंडित सुधीर माइंकर के अनुसार"शब्दालंकार का उद्देश्य मुख्यतः नादसुंदरता तथा नाद चमत्कृति निर्माण करना यह होने के कारण इन अलंकारों का प्रयोग तबला वादन में अनजाने में किया हुआ दिखाई देता है, तो कुछ कलाकार उनका प्रयोग हेतुपूर्वक करते हैं। वादन की प्रभावकारकता में वृद्धि इस प्रकार के अलंकारों से होने के कारण बंदिशकार तथा वादक कलाकारों को इस प्रकार के अलंकारों का अध्ययन तथा चिंतन गंभीरता से करना चाहिए और कलापूर्णता से उनका प्रयोग अपनी वादन क्रिया में करते रहना चाहिए। शब्दालंकार के तीन प्रकार माने जाते हैं 1) अनुप्रास 2) यमक 3) यति-" [3]

अनुप्रास अलंकार - किसी वाक्य पद या पंक्ति में एक ही वर्ण या स्वर की बार-बार उसकी पुनरावृत्ति होती है और उससे काव्य में मधुरता लय एवं सौंदर्य उत्पन्न होता है, तो उसको साहित्य की भाषा में उसे अनुप्रयास कहते हैं। सरल साहित्य में देखे तो एक ही ध्वनि बार-बार आए तो वह अनुप्रयास है। एवं सुनने में मधुर लगे तो उसमे अलंकार का प्रभाव होता है।

उदाहरण के लिए

- चंचल चपल चितवन चुरा ले गई इसमें 'च' वर्ण की पुनरावृत्ति हो रही है
- गगन घन घमंड घेरि घन घोर घटा इस पन्ति में 'घ' वर्ण की आवृत्ति हो रही है

"जिसे पदलालित्य कहा जाता है। पदलालित्य व्यजनावृत्ति, शब्दबंधावृत्ति तथा यमक इन तीनों के प्रयोग द्वारा निर्माण होता है। आवृत्ति अगर एक ही व्यंजन की एक ही बार हो और वह समास के पदारंभ में हो, तब वह तत्काल प्रतीत होती है, जैसे "कृष्णकुमारी", "तारातरंग" आदि। (तबले के संदर्भ में उदाहरण-कृष्णकुमारी-धागेन धात्रक)।

उदारहण -1

- चारा चंद्र की चंचल किरणें खेल जलथल में
- तबला के बोल- 'धाऽतिरकिट धागेतिरकिट धात्रकधेकेटे धीनगदीगन' (तिस्य जाति)
- एक और उदारहण तौर पर दी गई भैरवी की बंदिश में "या" अक्षर का प्रयोग बार बार हुआ दिखाई देता है।

उदारहण-2

- देखो मोरी चुरीया करक गइया सैंया छोडो नैंया परत पैया
- तोपे बलर्जेया जगत ननदीया जेठनीया दोरनीया चुरीया करक गड्या
- तबला के बोल - कत्तिट्घेघेतिट कत्तिरकिटतकधाऽघेन

इस अलंकार "रस का परिपोष करने वाली चमत्कृति निर्माण करने वाले अक्षरों की व्यजनों की पुनरावृत्ति जहाँ होगी है." ("अनेक वर्ण बारम्बार एक ही पंक्ति में आये) तो वहाँ 'अनुप्रास 'होता है।"[4] इस प्रकार अनुप्रयास अलंकार का तबला के साहित्य में प्रयोग होता है इसी प्रकार यमक आदि अलंकार भी किसी काव्य में एक ही शब्द या शब्द समूह का बार-बार प्रयोग हो, लेकिन हर बार उसका अर्थ अलग-अलग हो, तो वहाँ यमक अलंकार होता है। नयन नयन में बसत हैं नयनन के नैन, यहाँ 'नयन' शब्द बार-बार आ रहा है लेकिन अर्थ अलग-अलग संदर्भ में बदल रहा है। इसी प्रकार राम नाम में राम हैं, राम बिना सब शून्य राम शब्द की पुनरावृत्ति अलग अलग अर्थ में संकेत हो रही है।

यमक अलंकार - यमक अलंकार के बहुत प्रकार होते है जैसे पुष्पयमक, दामयमक, अध्ययमक, समुद्रक यमक, आदि | तबला के परिप्रेक्ष्य में दामयमक प्रस्तुत है इसके चरण के अंत में आये हुए 'यमक की जब निकट के अगले चरण में अलंकार की आवृत्ति होती है, तब ऐसे कुशल शब्दप्रयोग को 'दामयमक कहते हैं।

उड़दहारण-

"मचलते चलते ये जीव हैं दिवस में बस में रहते नहीं ।
विमलता मल ताप हटा रही विचरते चरते सुख से सभी ।

इस ऊपर दी गई कविता में बताये गये शब्दों का हम अध्ययन करें तब ऐसा प्रतीत होता हैं कि; पहले शब्दबंध के अंत में आया हुआ शब्द दूसरे शब्दबंध के आरंभ में आता है और इस प्रकार की रचना में ऐसे शब्द दोबारा आने से नाद चमत्कृति की निर्मिति होती है, जिसे सुनकर एक अलग प्रकार का नाद सौंदर्य निर्माण होता है। इस प्रकार की शब्द योजना से कविता श्रवणप्रिय होती है। इस प्रकार के चमत्कृतिपूर्ण शब्द दोहराने की शक्ति का प्रयोग तबले की रचनाओं में भी कुशल रचनाकार करते हैं। दामयमक अलंकार का प्रयोग की गई बंदिश यहाँ दी गई है।

ताल त्रिताल में दामयमक के दो उदाहरण

1- कडताड किटतक तकिटधा ऽनधागे....

2- धात्रकघे केटकत धेकेटकताधागेन कतधानेनद्यांत्रक..."

इस प्रकार के बोल यमक के अंतर्गत आते है|

तबला की बहुत सी ऐसी साहित्यिक रचना है जो तबला एकल वादन को प्राप्त है और वादक अपने वादन में ऐसी साहित्यतिक रचनाओं को बड़े ही चमत्कारी ढंग से प्रस्तुत किया करते हैं उदारहण के तौर पर बहुत प्रचलित कविता गत उस्ताद अमीर हुसैन खान द्वारा रचित है।

कविता के साहित्यिक बोल :-

1. खिलत कमल, खिल जात कमल,
   खिल गए कमल,कुछ कमल न खिल गए।
2. उड़त भँवर, उड़ जात भँवर,
   उड़ गए भँवर, कुछ भँवर न उड़ गए।
3. झड़त पत, झड़ जात पत,
   झड़ गए पत, कुछ पत न झड़ गए।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुप्रास और यमक आदि साहित्य अलंकार का तबला वादन में काव्य सौंदर्य है, इनका सीधा संबंध तबला वादन की रचना से भी है। अनुप्रास अलंकार के अंतर्गत वर्णों या रचना की पुनरावृत्ति जिस प्रकार तबला के काव्य में माधुर्य लय उत्पन्न करता है, उसी प्रकार तबले के बोल जैसे धा, तिरकिट, धागे, धिन, किट, तिन आदि से सुनियोजित रचना तबला वादन में मधुर्य लय का प्रवाह और सौंदर्य का सृजन करता है। यह साहित्य अभिव्यक्ति तबला की तकनीक में और संगीतात्मक भाषा में निहित रहती है, तबला वादन सुनने वाले श्रोता के मन पर भी इसका अत्यंत प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार, यमक अलंकार में एक ही शब्द की पुनरावृत्ति भिन्न-भिन्न अर्थों के साथ होकर जो चमत्कारिक प्रभाव उत्पन्न करता है, वह तबला वादन की रचनाओं में भी दृष्टिगोचर होता है। तबले की बंदिशों में समान या मिलते-जुलते बोलों की पुनरावृत्ति, भिन्न-भिन्न स्थानों से, मात्राओं या विन्यासों में प्रयोग,एक विशेष प्रकार की चमत्कारिक रचना को जन्म देता है।

विशेषतः दामयमक के संदर्भ में देखा जाए तो एक चरण के अंत में आए बोल का अगले चरण के आरंभ में पुनः प्रयोग, तबला रचना में एक संगीतात्मक निरंतरता (continuity) और आकर्षक विन्यास उत्पन्न करता है, जिससे वादन अधिक प्रभावपूर्ण बन जाता है। तबला वादन में इन अलंकारों का प्रयोग यह सिद्ध करता है कि तबला एक बहुरंगी वाद्य है, और तबला में ही निहित अधिक साहित्यिक एवं भाषिक अभिव्यक्ति है। तबले के बोलों की रचना, इन साहित्यिक अलंकारों के माध्यम से पुनरावृत्ति, और उनका क्रमबद्ध विन्यास ये सभी तत्व मिलकर एक ऐसी रचनात्मक संरचना का निर्माण करते हैं, जिसमें काव्य और संगीत का अद्भु त समन्वय देखने को मिलता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि अनुप्रयास और यमक अलंकार का प्रयोग केवल अन्य साहित्यिक सौंदर्य वृद्धि तक के लिए नहीं है, यह तबला वादन की दृष्टि से वादन में निहित अभिव्यक्ति, बोल गहनता, ताल और लयात्मकता तथा रचनाकार का कलात्मक प्रभाव को भी समृद्ध बनाता है।

संदर्भ सूची

1. सेन, अरुण कुमार. भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन. तृतीय संस्करण, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2005, पृ. 44।
2. कौशल, ललित कुमार. हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में वाद्यात्मक रस भावाभिव्यक्ति. कनिष्क पब्लिशर्स, 2012, पृ. 166।
3. माईणकर, सुधीर. तबला वादन में निहित सौंदर्य. सरस्वती पब्लिकेशन, मुंबई, 2008, पृ. 28।
4. माईणकर, सुधीर. तबला वादन में निहित सौंदर्य. सरस्वती पब्लिकेशन, मुंबई, 2008, पृ. 29।
5. माईणकर, सुधीर. तबला वादन में निहित सौंदर्य. सरस्वती पब्लिकेशन, मुंबई, 2008, पृ. 36।

गगन राज
शोधार्थी, संगीत विभाग डॉ हरिसिंह गौर विश्वविधालय सागर म.प्र.